हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार 1 फरवरी 2026

तापमान
अधिकतम 23 .0 डिग्री
न्यूनतम 4 .5 डिग्री

11 कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाओं का फायदा ...

12 हर ओर से हो रहा प्रवेश, एक भी सीसीटीवी ...

शहर में आज

- सती भाई साइ दास सेवा दल में डिस्पेन्सरी एवं धर्मशाला का शिलान्यास आज सुबह 11 बजे
- गुरु रविदास जयंती के उपलक्ष में समारोह का आयोजन सुबह 10 बजे
- एमडीयू में इंटर कॉलेज नेटबॉल प्रतियोगिता सुबह 10 बजे
- नेकीराम कॉलेज में फुटबॉल प्रतियोगिता सुबह 10 बजे
- मायना में चौथी हरिदास दौड़ प्रतियोगिता

बिजली कट

- सुबह 11 से दोपहर 3 बजे तक

सूर्य नगर, बैंक कॉलोनी, गोहाना रोड, पीर बोढी, छिकारा पैट्रोल पम्प, रॉयल वैल वेट होटल, सांगवान एकेडमी

- सुबह 10 से शाम 4 बजे तक

विकास नगर, किशनपुरा, सोनिपत रोड ,झंग कॉलोनी, मानसरोवर कॉलोनी, बजरंग भवन

- सुबह 10 से शाम 5 बजे तक

किला रोड मंदिर वाली गली, गनेरी वाली गली, किला रोड की सभी मार्केट

गांव सैमाण में पीएम आवास योजना के तहत मकान बनाने में गड़बड़ी का खुलासा

अपात्रों को बांट दिया घर बनाने के लिए पैसा, लोकपाल ने पकड़ा फर्जीवाड़ा

8,46,000 की रिकवरी के आदेश

- पंचायत ने नियमों को ठेंगा दिखा उन महिलाओं को पात्र बनाया, जिनके पास पहले से पक्का मकान था
- जिला विकास एवं पंचायत अफसर ने लोकपाल की कार्रवाई पर ही खड़े कर दिए कई सवाल
- आरोप-लोकपाल ने जांच करने में कोताही बरती पंचायत के पक्ष को सुना ही नहीं गया

■ डीडीपीओ बोले-लोकपाल को रिकवरी का आदेश जारी करने का अधिकार नहीं

अमरजीत एस गिल ▶▶| रोहतक

गांव सैमाण की पंचायत ने प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना में अपात्र परिवारों की पहचान करके उन्हें सरकार से मकान बनाने के लिए लाखों रुपये सरकार से जारी करा दिए। मामला का भंडाफोड़ गांव के ही आरटीआई कार्यकर्ता ने किया तो मनरेगा लोकपाल ने जांच की। अब इंक्वायरी पूरी होने के बाद आठ महिला लाभार्थियों से 846000 रुपये की रिकवरी करने के बारे में बीडीपीओ महम को पत्र भेज दिया है। इस संबंध में जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी राजपाल चहल का कहना है कि लोकपाल ने जांच करने में पूरी तरह से कोताही बरती है। उन्होंने पंचायत पक्ष सुने बिना ही पैसे की रिकवरी का पत्र खंड कार्यालय को भेज दिया। चहल ने बताया कि रिकवरी के आदेश जारी करने का लोकपाल का अधिकार ही नहीं है। रिकवरी कराने का अधिकार अतिरिक्त उपायुक्त का है।

रिकवरी के आदेश का पत्र

आरटीआई कार्यकर्ता ने किया खुलासा

आरटीआई कार्यकर्ता प्रदीप कुमार

वर्ष 2017-18 में सैमाण की महिलाओं ने केंद्र सरकार से मकान बनवाने के लिए फार्म भरे। जिन महिलाओं ने फार्म अप्लाई किए, वे पात्र हैं या नहीं, इसकी जांच सरपंच, ग्राम सचिव, पटवारी, जेई और खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी महम ने की। जांच एक बार नहीं पांच बार की। लेकिन ऐसी महिलाओं के नाम की संस्तुति अधिकारियों ने सरकार को भेज दी। जो योजना की पात्र नहीं थी। अपात्र महिलाओं की सिफारिश की जानकारी गांव के ही आरटीआई कार्यकर्ता प्रदीप कुमार को लगी तो उन्होंने व अपने एक सहयोगी सुभाष से मिलकर इसकी शिकायत प्रशासन को की। फिर मामले की जांच मनरेगा लोकपाल डॉ. एसएस रंगा ने शुरू की। जांच सितंबर 2025 में पूरी हो गई। बताया जा रहा है कि जब लोकपाल जांच के लिए गांव सैमाण गए तो उनके साथ ही बस्ती के लोगों ने कहासुनी की।

इन 8 महिलाओं से होगी रिकवरी

क्र:	नाम	पिता/पति का नाम	रिकवरी राशि
1.	सोनिया	ऋषिपाल	45000
2.	इन्द्रो	धर्मपाल	138000
3	संतरा	राजबीर	105000
4.	बिमला	सतपाल	105000
5.	दयावंती	सज्जन	105000
6.	रामिला	नफे सिंह	138000
7.	कमलेश	रमेश	105000
8.	सुनीता	नरेश कुमार	105000
कुल			846000

प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत 1.86 लाख मिलते हैं मकान बनाने के लिए

प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के तहत महिला मुखिया को तीन किस्तों में 1 लाख 38 हजार रुपये नगद, 90 दिन की मनरेगा मेहनताना(440 रुपये प्रतिदिन) 12 हजार रुपये शौचालय बनाने के लिए दिए जाते हैं। मकान उनके ही बन सकते हैं, जिनके पास रहने के लिए अपना पक्का मकान न हो। बताया जा रहा है कि सैमाण की पंचायत ने सरकार के सभी नियमों को ठेंगा दिखाकर उन महिलाओं को पात्र बना दिया, जिनके पास पहले से पक्का मकान था। एक मामला तो ऐसा भी बताया जा रहा है कि महिला का अपना दो मंजिल का घर था, फिर भी वह सरकार से 138000 रुपये हासिल कर गई। महिला ने अपनी ससुराल में पति की बजाय पिता का नाम प्रयोग करके पोर्टल पर फार्म भरा। ताकि पहचान न हो सके। सूत्र तो ये भी बताते हैं कि उक्त महिला एक चुने हुए पूर्व मुख्य प्रतिनिधि की पत्नी है।

लोकपाल को लिखित शिकायत करें तथ्य सही पाए जाने पर होगी जांच

■ मनरेगा कार्यों में पारदर्शिता, जवाबदेही और शिकायतों के समयबद्ध निपटान के लिए लोकपाल किया जाता नियुक्त

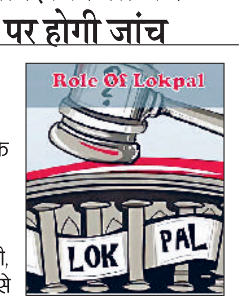

मनरेगा लोकपाल एक स्वतंत्र अधिकारी होता है, जिसे मनरेगा कार्यों में पारदर्शिता, जवाबदेही और शिकायतों के समयबद्ध निपटान (30 दिनों के भीतर) के लिए हर जिले में नियुक्त किया जाता है। यह मजदूरों को मजदूरी, काम या सुविधाओं से संबंधित शिकायतें सुनने, जांच करने और कार्रवाई करने का अधिकार रखता है। केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही ग्रामीण विकास की समस्त योजनाओं को लेकर अगर किसी व्यक्ति को शिकायत है तो वह लोकपाल को लिखित शिकायत कर सकता है। तथ्य सही पाए जाते हैं तो उसकी जांच होगी।

रोहित गोदारा गैंग के नाम से व्हाट्सएप कॉल की, दहशत में दुकानदार

कपड़ा व्यापारी से मांगी एक करोड़ की रंगदारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जिले में गारमेंटस शोरूम संचालक को एक करोड़ रुपये की रंगदारी की धमकी मिलने से व्यापारियों में दहशत का माहौल बन गया है। झज्जर जिले के गांव खरमाण निवासी और रोहतक के नए बस स्टैंड के पास दुकान चलाने वाले सुंदर सांगवान को व्हाट्सऐप कॉल के जरिए धमकी दी गई। कॉलर ने खुद को कुख्यात गैंगस्टर रोहित गोदारा गैंग से जुड़ा बताते हुए एक करोड़ रुपये की मांग की और रकम न देने पर गंभीर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी। मामले की शिकायत व्यापारी ने सीधे एसपी सुरेंद्र भौरिया से की, जिसके बाद पुलिस ने सुरक्षा के मद्देनजर उनकी दुकान और आवास पर एक पुलिसकर्मी तैनात कर दिया है। हालांकि सुंदर सांगवान साधारण परिवार से आते हैं और उन्होंने कई साल पहले यू ट्यूब चैनल पर वीडियो बनानी शुरू की।

धमकी से पहले की रैकी

सुंदर सांगवान ने बताया कि कॉलर ने फोन पर दुकान से जुड़ी बेहद सटीक जानकारियां दीं। उसने बताया कि दिन में किस समय दुकान पर कौन आता है, कौन-सा सामान लाया जाता है और किस समय दुकान बंद होती है। इससे साफ है कि आरोपी ने पहले से उसकी पूरी रैकी कर रखी थी।

स्क्रीन रिकॉर्डिंग ने बढ़ाई मामले की गंभीरता

व्यापारी ने सूझबूझ दिखाते हुए व्हाट्सऐप कॉल के दौरान स्क्रीन रिकॉर्डिंग शुरू कर दी, जिसमें आरोपी द्वारा कही गई सारी बातें रिकॉर्ड हो गईं। इस रिकॉर्डिंग को उन्होंने पुलिस को सौंप दिया है। रिकॉर्डिंग सुनने के बाद पुलिस ने मामले को गंभीर मानते हुए तुरंत कार्रवाई शुरू कर दी। एसपी के निर्देश पर व्यापारी की सुरक्षा के लिए पुलिसकर्मी तैनात किया गया है और तकनीकी जांच भी शुरू कर दी गई है। पुलिस जांच कर रही है कि धमकी रोहित गोदारा गैंग ने दी है या किसी युवक ने उसके नाम का प्रयोग किया है।

रात के समय आई धमकी भरी कॉल

पीड़ित सुंदर सांगवान ने बताया कि 29 जनवरी की रात उसके मोबाइल फोन पर एक अनजान नंबर से व्हाट्सऐप कॉल आई। कॉल उठाते ही सामने से धमकी भरी आवाज सुनाई दी। कॉलर ने कहा कि "एक करोड़ रुपये देने होंगे, अगर फोन काटा तो तुझे महंगा पड़ेगा। इसके बाद जो भी होगा, उसका जिम्मेदार तू खुद होगा। अचानक आई इस धमकी से वह घबरा गया। शुरुआत में उसने इसे मजाक समझा, लेकिन कॉलर की बातों और जानकारी ने उसे गंभीर रूप से डरा दिया।

आरोपी को जल्द पकड़ लिया जाएगा

मामले को गंभीरता से लिया गया है। पीड़ित व्यापारी को सुरक्षा मुहैया करवाई गई है। तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जांच की जा रही है। दोषियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।
-सुरेंद्र भौरिया, एसपी रोहतक

देर रात बदला मौसम, बारिश और ओले गिरे

रात 11.45 बजे
फोटो : हरिभूमि

रोहतक। मौसम में शनिवार शाम अचानक परिवर्तन आया। दिन में हल्के बादल छाने के बाद देर रात हल्की बूंदाबांदी के साथ कुछ इलाकों में ओलावृष्टि भी हुई। मौसम विभाग ने शनिवार रात से ही बदलाव और कुछ इलाकों में बारिश के साथ ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया था। रविवार को भी ऐसा ही मौसम बने रहने की संभावना जताई है।

इंडो-फ्रेंच लीगल कॉन्फ्रेंस में सिद्धार्थ बत्रा का संबोधन

रोहतक। पेरिस में आयोजित इंडो-फ्रेंच लीगल एंड बिज़नेस कॉन्फ्रेंस में सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड सिद्धार्थ बत्रा ने भारतीय और फ्रांसीसी विधि समुदाय को संबोधित किया। यह सम्मेलन पेरिस बार एसोसिएशन और इंडो-फ्रेंच चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ। अपने संबोधन में सिद्धार्थ बत्रा ने भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत की न्यायिक यात्रा और उनके न्याय दर्शन पर प्रकाश डाला। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने 37 वर्ष की आयु में हरियाणा के महाधिवक्ता के रूप में कार्य किया।

स्कूल से लौट रहे तीन छात्रों पर जानलेवा हमला

- गांधरा में महिलाओं समेत चार आरोपियों ने रास्ता रोककर पीटा, एक की हालत गंभीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जिले के सांपला थाना क्षेत्र के गांव गांधरा में स्कूल से घर लौट रहे तीन छात्रों पर रास्ता रोककर लाठी-डंडों से हमला किए जाने का गंभीर मामला सामने आया है। इस हमले में एक छात्र को सिर में गंभीर चोट आई है, जबकि दो अन्य छात्र भी घायल हुए हैं। घटना के बाद घायलों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया। पुलिस ने पीड़ित छात्रों के बयान के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। घायल छात्र अमन ने पुलिस को बताया कि साथी आकाश और साहिल के साथ लंच ब्रेक में स्कूल से घर लौट रहा था। गांव गांधरा की एक गली में पहुंचे, वहां घात लगाए बैठे कुछ लोगों ने उनका रास्ता रोक लिया। अमन के अनुसार, आरोपियों में सुमेर पुत्र राजसिंह, उसकी पत्नी रविता, करिश्मा पत्नी गुलाब और शिल्पा शामिल थे। सभी आरोपी हाथों में लाठी-डंडे लिए हुए थे।

ट्रक ने कार को मारी टक्कर बाप-बेटी गंभीर घायल

गांव भैसरु खुर्द के पास हादसा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जिले के सांपला थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क हादसा सामने आया है, जहां रॉन्ग साइड से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने एक कार को टक्कर मार दी। इस हादसे में खरखौदा निवासी एक व्यक्ति और उसकी बेटी गंभीर रूप से घायल हो गए। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने पीड़ित के बयान के आधार पर आरोपी चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। दुर्घटना सांपला थाना क्षेत्र के गांव भैसरु खुर्द के नजदीक हुई। खरखौदा के प्रताप कॉलोनी निवासी जितेंद्र अपनी बेटी हंसिका के साथ कार में सवार होकर गांव भैसरु खुर्द से खरखौदा लौट रहे थे। जब वे गांव के पास पहुंचे, तभी सामने से गलत दिशा में आ रहे एक ट्रक ने उनकी कार को सीधी टक्कर मार दी।

न्यायिक अधिकारियों और बार पदाधिकारियों ने किया दौरा

16 फरवरी को रोहतक आएंगे सीजेआई सूर्यकांत, बार एसोसिएशन के अभिनंदन समारोह में करेंगे शिरकत

- सूर्यकांत ने साल 1984 में महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी से हासिल की थी कानून की डिग्री
- बार एसोसिएशन ने रोहतक आने के लिए दिया था निमंत्रण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत 16 फरवरी को रोहतक आएंगे। वे यहां बार एसोसिएशन रोहतक की ओर से आयोजित अभिनंदन समारोह में शिरकत करेंगे। इसी के मद्देनजर जिला न्यायालय के न्यायिक अधिकारियों तथा बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शनिवार को समारोह स्थल का दौरा किया। दौरा करने वालों में प्रमुख तौर पर अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश रजनी यादव, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश संदीप कुमार दुग्गल, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश शैलेंद्र नरवाल, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कौशिक, एसीजेएम मोहम्मद सागीर, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव डा. तरन्नुम खान तथा जिला बार एसोसिएशन के प्रधान दीपक हुड्डा शामिल थे। बार एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल ने जनवरी में मुख्य न्यायाधीश से दिल्ली स्थित आवास पर मुलाकात कर रोहतक आने का निमंत्रण दिया था। इस दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने रोहतक के साथ अपने भावनात्मक जुड़ाव को याद किया और जल्द ही रोहतक का दौरा करने का आश्वासन दिया था। सीजेआई सूर्यकांत ने वर्ष 1984 में महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री हासिल की थी।

रोहतक। जिला न्यायालय के न्यायिक अधिकारी व बार एसोसिएशन के प्रधान दीपक हुड्डा बार परिसर का दौरा करते हुए। फोटो : हरिभूमि

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत–अमेरिका व्यापार वार्ताओं में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रंप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कभी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अन्नदाताओं के लिए क्या खोलती हैं। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्संतुलन का संकेत देगा।

समय की आवश्यकता

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूज (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति शृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

कृषि क्षेत्र
सेंट्रल डेस्क

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2026 में भारत वैश्विक मंच पर दो प्रमुख उपलब्धियों के साथ प्रमुख भूमिका में होगा। संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है, जो कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और कृषि व ग्रामीण आजीविका में लैंगिक अंतर को पाटने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता देता है। भारत अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जो अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने का अवसर देगा। आगामी केंद्रीय बजट महिला-नेतृत्व वाली कृषि पहलों के लिए संसाधन आवंटित कर व वैश्विक कृषि-खाद्य निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को सशक्त बनाएगा।

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटन वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयां और डिजिटल आपूर्ति-शृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से प्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल–तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030–31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चयनित दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

खाद्य सुरक्षा
सेंट्रल डेस्क

भारतीय कृषि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। एक ओर देश आत्मविश्वास के साथ स्वयं को वैश्विक खाद्य महाशक्ति, दुनिया के लिए एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और कृषि विनिर्माण के केंद्र के रूप में स्थापित करने की बात करता है। दूसरी ओर फसल सुरक्षा, किसानों की स्थिरता और खाद्य मूल्य संतुलन की रीढ़ से जुड़ा नीतिगत पारिस्थितिकी तंत्र सक्रिय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे केंद्रीय बजट 2026 नजदीक आ रहा है, यह समय अधिक स्पष्टता, विश्वास और विज्ञान-आधारित निर्णय प्रक्रिया के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता का अवसर प्रदान करता है। पिछले वर्ष के दौरान फसल सुरक्षा पर सार्वजनिक विमर्श विशेष रूप से सक्रिय रहा है। कीटनाशकों पर अक्सर केवल जोखिम के दृष्टिकोण से चर्चा होती है, जबकि फसल हानि रोकने, किसानों की आय की रक्षा करने और खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में उनकी भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। यह असंतुलन ऐसे समय में सामने आता है जब भारतीय किसान हर वर्ष कीटों, रोगों और खरपतवारों के कारण 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की फसलें खो देते हैं। यह ऐसी हानि है जिसे खाद्य सुरक्षा और निर्यात नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश अनदेखा नहीं कर सकता।

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समयसीमा को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुल का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मूलभूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। असल में उपज की रक्षा करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना। इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा।

किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना

बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिमुलेंट/जैविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य शृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति शृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और स्वाभाविक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चितता आवश्यक है। यद्यपि भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढाँचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।

इंश्योरेंस सेक्टर्स को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा
सेंट्रल डेस्क

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली है। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टर्स को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

- वित्त मंत्री एक फरवरी को कर सकती हैं बड़े ऐलान

सेक्शन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों को पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्टेलिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है. बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेटेड दर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेटेड किया जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं :** पॉलिसीधारकों के लिए क्लेम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना :** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- **नियमों में बदलाव :** इंश्योरेंस सेक्टर को अधिक लेबल प्लेयरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहें और उन्होनें कई बजट पेश किए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के किन वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

आजादी के बाद पहला बजट

- आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे. उन्होने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं. उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था. वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए. बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बनें और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री है और वह साल 2019 से इस पद पर है। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर्स पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर लॉजिस्टिक कॉस्ट घटेगी, निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे

इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन एनर्जी और एमएसएमई पर भी ध्यान दे केंद्र सरकार

इन्फ्रा
सेंट्रल डेस्क

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैन्युफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।

ग्लोबल तनाव बढ़ा रहे चुनौतियां

अमेरिका के बढ़ते टैरिफ, लगातार चल रहे जियो-पॉलिटिक्स तनाव और सप्लाई चेन में बदलावों की वजह से कंपनियों के लिए अब लागत को काबू में रखना, नीति की स्थिरता और प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना बहुत अहम हो गया है। यही वजह है कि निवेश और व्यापार से जुड़े फैसले पहले से ज्यादा सोच-समझकर लिए जा रहे हैं।

भारत की स्थिति बेहतर

दुनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैन्युफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और इंफ्रास्ट्रक्चर में लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इंफ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान ढोने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कार्गो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए बीओटी मॉडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैन्युफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई स्कीम (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैन्युफैक्चरिंग, लागत और एग्जिक्यूशन से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च एंड डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इनोवेशन पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर भरोसेमंद पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की एमिशन इंटेंसिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जीरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे भरोसे के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, क्लीन एनर्जी क्लस्टर विकसित हों और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और पेमेंट डिले जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है।

इन क्षेत्रों को भी चाहिए बूस्ट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑन्कोलॉजी, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेगमेंट में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग बढ़े। जीवन कसारा के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निर्भरता घट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।

खबर संक्षेप

12 फरवरी की राष्ट्रव्यापी हड़ताल को दिया समर्थन

रोहतक। ऑल रिटायर्ड कर्मचारी वैलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह धनखड़, महासचिव सत्यवान शास्त्री, वित सचिव प्रेम सिंह सैनी ने वर्तमान केन्द्र व राज्य सरकार की कर्मचारी व मजदूर विरोधी नीतियों बारे कटु आलोचना करते हुए कहा कि सरकार संवैधानिक रूप से प्रदत मौलिक अधिकारों का सीधा हनन कर रही है। कर्मचारियों नेताओं ने निजीकरण, छटनी, ठेकाकरण के विरोध में तथा ट्रेड यूनियनों पर लगातार किये जा रहे हमलों को लेकर 12 फरवरी को राष्ट्रव्यापी हड़ताल का ऑल रिटायर्ड कर्मचारी वैलफेयर एसोसिएशन द्वारा पूर्ण समर्थन करने का ऐलान किया।

आदर्श स्कूल मदीना में गणतंत्र मेला आज

महम। रविवार एक फरवरी को आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल मदीना में गणतंत्र मेले का आयोजन किया जाएगा। प्रिंसिपल मंजू लता ने बताया कि इस मेले में क्षेत्र की महिलाएं और 14 साल तक के बच्चे आमंत्रित किए गए हैं। इस मेले का उद्देश्य लोगों में लोकतंत्र और संविधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना तथा अपने देश की संस्कृति से रुबरु करवाना है।

महिला सशक्तिकरण का संदेश दिया

रोहतक। स्पंदन संस्था की मासिक काव्यगोष्ठी ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई। गाजियाबाद की रहने वाली प्रसिद्ध साहित्यकार रामेश्वरी नादान की अध्यक्षता में हुई इस काव्यगोष्ठी में दिल्ली, टोहाना, करनाल, रोहतक आदि से कवियों ने रिश्ते, समाज, महिला सशक्तिकरण और मेहनतकश की व्यथा आदि विषयों पर मानवमन की कोमलतम भावनाओं से लबरेज कविताएं प्रस्तुत की गईं।

वैज्ञानिक सोच ही प्रगति का आधार: शमशेर हुड्डा

रोहतक। राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में शनिवार को भौतिक विज्ञान विभाग और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय सेमिनार का भव्य आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शमशेर हुड्डा के कुशल दिशा-निर्देशन में संपन्न हुआ। अतिथियों का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. शमशेर हुड्डा ने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति में तार्किक और वैज्ञानिक सोच विकसित करता है।

अधिकारी गांव-गांव जाकर लोगों को योजनाओं की दे रहे जानकारी

कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाओं का फायदा उठाएं ग्रामीण : उपायुक्त

- कृषि क्षेत्र की एक-एक इंच भूमि का करना होगा सदुपयोग
- परंपरागत फसलों तक निर्भर न रहकर विविधीकरण अपनाएं
- ग्रामीण विकास के लिए योजनाओं व धन की नहीं है कोई कमी
- कार्यशाला में छोटी जोत में अधिक मुनाफे बारे दी गई जानकारी
- सेम समस्या: समाधान के लिए स्थापित होगा वर्टिकल ड्रेनेज सिस्टम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने ग्रामीणों से कृषि व कृषि से जुड़े अन्य विभागों की योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया है। उपायुक्त आज गांव माडौदी जाटान में किसानों के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए आयोजित कार्यशाला में ग्रामीणों को संबोधित कर रहे थे।

सचिन गुप्ता ने कृषि व कृषि से जुड़े हुए अन्य विभागों के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे अपने-अपने विभागों की योजनाओं का विवरण लेकर गांव में पहुंचे। ग्रामीणों को इन सभी स्कीमों की जानकारी दें। योजनाओं के लाभ हेतु उनके आवेदन करवाए ताकि ग्रामीणों को सरकार की योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। उपायुक्त ने कहा कि हमें कृषि भूमि की एक-एक इंच भूमि का सदुपयोग करना होगा।

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने कहा कि किसानों को यह जानना जरूरी है कि उनकी कृषि भूमि की मिट्टी में कौन सी फसल अधिक लाभकारी साबित हो सकती है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि गांव माडौदी जाटान में बहुत से प्रगतिशील किसान है, जिन्होंने नई-नई तकनीक अपनाकर कृषि को मुनाफे का धंधा बनाया है। अन्य किसानों को भी इन प्रगतिशील किसानों के खेतों का भ्रमण करके उनसे सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें परंपरागत केवल दो ही फसलों पर निर्भर नहीं रहना होगा, बल्कि कृषि का विविधीकरण करके आय को बढ़ाना होगा।

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने कहा कि जिला प्रशासन का प्रयास है कि कृषि क्षेत्र को वैज्ञानिक तरीके से आगे ले जाया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों को पानी व मिट्टी का विश्लेषण करवा कर यह पता लगाना होगा कि कौन सी फसल उनके लिए लाभकारी है। इस संदर्भ में उन्होंने अधिकारियों को एक्शन प्लान बनाने के भी निर्देश दिए।

रोहतक। आयोजित कार्यक्रम में मुख्यअतिथि उपायुक्त सचिन गुप्ता को स्मृति चिन्ह देते गांव माडौदी जाटान के सरपंच अनूप सिंह व अन्य ग्रामीण।

ये रहे मौजूद

कृषि विभाग उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र मलिक, पशुपालन विभाग के उप निदेशक डॉ. नरेंद्र दहिया, जिला बागवानी अधिकारी डॉ मदन, जिला मत्स्य अधिकारी आशा हुड्डा, भूमि सर्वेक्षण अधिकारी अनिल अहलावत, मंडल भूमि संरक्षण अधिकारी नीना सुहाग, खंड विकास अधिकारी व अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं

डीसी ने ग्रामीणों की समस्याओं को भी सुना और कहा कि ग्रामीण अपनी समस्याएं लिखित रूप में प्रेषित करें ताकि उन पर कार्रवाई की जा सके। सचिन गुप्ता ने स्पष्ट किया कि ग्रामीण विकास के लिए ना तो धन की कोई कमी है और न ही योजनाओं की। बशर्ते की ग्रामीण इन योजनाओं का लाभ उठाने का प्रयास करें।

श्रमिकों के विवरण बारे प्रस्तुत करनी होगी मासिक रिपोर्ट : सचिन गुप्ता

- रिपोर्ट में घायल श्रमिकों का विवरण भी जरूरी
- श्रमिकों के बच्चों के स्कूलों में करवाए जाए दाखिले

रोहतक। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने उद्योगों और फैक्ट्री में काम करने वाले श्रमिकों का मासिक ब्यौरा लेने के निर्देश दिए हैं। उपायुक्त शनिवार को अपने कैंप कार्यालय में श्रम विभाग की योजनाओं को लेकर समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। सचिन गुप्ता ने कहा कि मासिक रिपोर्ट में यह विवरण होना चाहिए कि संबंधित उद्योग अथवा फैक्ट्री में कितने श्रमिक काम कर रहे हैं। उनमें से प्रवासी श्रमिकों की संख्या कितनी है। इसके साथ ही इस रिपोर्ट में घायल श्रमिकों का भी विवरण होना चाहिए। उन्होंने निर्देश दिए कि जो उद्योग अथवा फैक्ट्री संचालक मासिक रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं करता है उसे नोटिस जारी किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक उद्योग व फैक्ट्री को नियमों की पालना सुनिश्चित करनी होगी। उपायुक्त सचिन गुप्ता ने कहा कि ईंट-भट्टों पर कार्यरत श्रमिकों के सभी बच्चों के स्कूलों में दाखिले करवाना सुनिश्चित किया जाए।

रबी सीजन से पूर्व मंडियों में तैयारियां पूर्ण की जाएं

उपायुक्त सचिन गुप्ता ने जिला की सभी मंडियों में आगामी रबी सीजन से पूर्व सभी जरूरी सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उपायुक्त अपने कैंप कार्यालय में गेहूं व सरसों की फसल की आवक को लेकर मंडियों में की जाने वाली तैयारी बारे समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जिला के अंतर्गत आने वाली रोहतक, सांपला व महम मंडियों की सुविधा बारे कार्य योजना तैयार की जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मंडी सचिव को मंडी में शैड, लाइट, सड़कें व प्लेटफॉर्म आदि की सुविधाओं को दुरुस्त करना होगा। इस बारे उन्होंने सभी मंडी सचिवों को प्रमाण पत्र देने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि 15 मार्च तक सभी मंडियों में सभी जरूरी सुविधाएं पूर्ण करनी होंगी। उन्होंने कहा कि 15 मार्च के बाद वे स्वयं मंडियों का दौरा करके जरूरी सुविधाओं का निरीक्षण करेंगे।

जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल में अकादमिक प्रस्तुतियों का भव्य एवं ज्ञानवर्धक उत्सव

रोहतक। जॉन वेस्ले कॉन्वेंट स्कूल, रोहतक में कक्षा पांचवीं एवं छठी के विद्यार्थियों के लिए अकादमिक प्रस्तुतियों का भव्य, रंगारंग और ज्ञानवर्धक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मकता, आत्मविश्वास तथा शैक्षणिक अवधारणाओं की व्यावहारिक समझ को सशक्त करना रहा। विद्यार्थियों ने एक्सप्लोरिंग इंडिया थीम पर आधारित प्रभावशाली प्रस्तुतियां देकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन व प्रार्थना संगीत से हुआ, जिसके बाद गणेश वंदना नृत्य ने वातावरण को मंगलमय बनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. सत्यवान बरोड़ा तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. अनंत शर्मा एवं डॉ. उषा शर्मा का विद्यालय परिवार द्वारा सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। प्रधानाचार्या डॉ. ममता मलिक ने अतिथियों का अभिनंदन करते हुए विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों एवं उत्कृष्ट शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डाला। विद्यार्थियों ने देशभक्ति कविता, समूह नृत्य, "एकता में विविधता" नाट्य प्रस्तुति, गणित व विज्ञान आधारित नाटिकाओं के माध्यम से भारत की संस्कृति व शैक्षणिक अवधारणाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया।

गुरु रविदास जी के 649वें जन्मोत्सव पर भव्य शोभायात्रा में उमड़ा जनसैलाब

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रोहतक

संत शिरोमणि गुरु रविदास के 649वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में संत शिरोमणि गुरु रविदास महासभा के तत्वावधान में शनिवार को भव्य एवं विशाल समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तेज कॉलोनी स्थित संत शिरोमणि गुरु रविदास महासभा प्रांगण से भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें समाज के सैकड़ों लोगों ने श्रद्धा और उत्साह के साथ भाग लिया।

सुबह 9 बजे निशान साहिब की विधिवत पूजा-अर्चना के पश्चात शोभायात्रा का शुभारंभ किया गया। शोभायात्रा पाड़ा मोहल्ला, डेहरी मोहल्ला, माता दरवाजा, बस स्टैंड, भिवानी स्टैंड, रेलवे रोड, झज्जर रोड, शॉत मई चौक व गोहाना स्टैंड सहित शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई आगे बढ़ी। यात्रा के दौरान गुरु रविदास जी के जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो गया। श्रद्धालु हाथों में झंडे, बैनर और गुरु रविदास जी की तस्वीरें लेकर चल रहे थे।

रोहतक। प्रतिमा पर माल्यार्पण करते नरेन्द्र आर्य, सागर मुराल व अन्य समाज।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र सिंह भोरिया (आईपीएस) उपस्थित रहे, जबकि प्रसिद्ध समाजसेवी कृष्ण कलानौर मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। विशेष अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त आबकारी अधिकारी रोहतास तंवर एवं के. बलवंत सिंह भोरिया ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अपनी संस्कृति, अपना अभिमान के साथ शिक्षा भारती स्कूल का वार्षिक उत्सव संपन्न

रोहतक। शिक्षा भारती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गोहाना रोड में विद्यालय का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास, गरिमा एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। आयोजन में शिक्षा, संस्कृति और संस्कारों का सुंदर समन्वय देखने को मिला। मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री राजेश नागर ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, संस्कारों और राष्ट्रभक्ति का विकास होना चाहिए।

भगत सिंह एकादश ने पांच विकेट से मैच जीता

रोहतक। गोयल विंटर कप के तहत विश्वकर्मा क्रिकेट मैदान में खेले गए मैच में शहीद भगत सिंह क्रिकेट क्लब एकादश ने सुगनि देवी क्रिकेट फाउंडेशन एकादश को पांच विकेट से हराया। पुनित शर्मा को मैन ऑफ द मैच व ध्रुव को बेस्ट गेंदबाज चुना गया। पहले बल्लेबाजी करते हुए सुगनि एकादश की टीम 16.2 ओवर में 101 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। सुगनि एकादश की ओर से पीयूष ने 30 व आशीष ने 27 रन बनाए।

जीवन राम राम बशेश्वर लाल रानीलावाला स्कूल में 12वीं के विद्यार्थियों को दी विदाई

रोहतक। जनता कॉलोनी स्थित जीवन राम राम बशेश्वर लाल रानीलावाला सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल, रोहतक में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए एक भव्य, गरिमामय एवं भावनात्मक विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्रबंध निदेशक अमित महमियां, निदेशक अमन गर्ग एवं प्रधानाचार्य कृष्ण सिंह खोखर द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। समारोह में विद्यार्थियों ने रंगारंग नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपने अध्यापकों को उपहार भेंट कर सम्मान प्रकट किया, जबकि जूनियर छात्रों ने सीनियर विद्यार्थियों को स्मृति-चिह्न देकर विदाई दी। कार्यक्रम का संचालन भानु मल्होत्रा, हर्षिता जैन एवं कशिश वर्मा ने किया। स्कूल हेड गर्ल हर्षिता जैन ने प्रेरणादायक संदेश देकर सभी को भावुक कर दिया। वाशु रिढाल को मिस्टर फेयरवेल और अंशिता को मिस फेयरवेल चुना गया। अन्य पुरस्कारों में हिमांशी (फ्यूचर टॉपर), करीना (काइंड हार्टेड), प्रशांत (बेस्ट अटायर) और जयदेव (बेस्ट आर्टिस्ट) शामिल रहे।

महापुरुषों के विचारों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की पहल : डॉ रंगा

रोहतक। सरकार द्वारा महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना के अंतर्गत कुरुक्षेत्र जिले के उमरी में आयोजित संत शिरोमणि गुरु रविदास की 649वीं जयंती के राज्य स्तरीय समारोह में जिले से भारी संख्या में श्रद्धालुओं, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं जनसामान्य ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं विशेषकर महिलाओं ने भजन कीर्तन करते हुए ढोल नगाड़ों पर नाचते गाते उमरी के लिए प्रस्थान किया। कार्यक्रम में संत गुरु रविदास के विचारों - समता, समानता, सामाजिक न्याय और मानवता को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया गया। समारोह में भक्ति भाव के साथ महिलाओं ने कीर्तन व प्रवचन का आयोजन हुआ। जिले से कार्यक्रम में शामिल हुए जिला प्रभारी (सभी प्रकोष्ठ) डॉ. अशोक कुमार रंगा भाजपा ने कहा कि सरकार की यह योजना महापुरुषों के विचारों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की एक सार्थक पहल है। उन्होंने कहा कि गुरु रविदास ने समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त कर समरसता और समान अधिकारों की स्थापना का संदेश दिया।

MANSAROVER HOSPITAL
MULTI SUPER SPECIALITY HOSPITAL
NEAR PNB BANK, OPP. VIKAS NAGAR, SONIPAT ROAD, ROHTAK, HARYANA
RECEPTION: 01262-253500, 9053005599, 9254302848
Latest MRI & Multi Slice CT SCAN
- Neuro Surgery
- General Medicine
- General Surgery
- Orthopedics
- ब्रेन, रीढ़ की हडिड्यों का ईलाज
- दूरबीन द्वारा सभी बिमारियों के ऑपरेशन
- पेट, छाती से सम्बंधित सभी बिमारियों का ईलाज
फौजी भाईयों का इलाज ECHS
• हरियाणा सरकार
• आयुष्मान भारत
• ESIC
के पैनल पर
DR. BALKISHAN GOEL
M.B.B.S, M.S, M.CH.
TRAUMA CENTRE, ICU & CRITICAL CARE
NEURO-ICU, GENERAL ICU, HOU (HIGH DEPENDANCY UNIT) जहर POISIONING CASE
24 HRS LAB/CAFE/PHARACY/AMBULANCE

सांघी में दादा बिसाधे के वार्षिक मेले में रागनियों व कुश्ती दंगल ने बांधा समां

रोहतक। गांव सांघी में दादा बिसाधे का वार्षिक मेला अत्यंत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जहां भक्ति और संस्कृति का संगम देखने को मिला, वहीं कुश्ती अखाड़े में पहलवानों के दांव-पेंचों ने दर्शकों में भारी जोश भर दिया। मेले के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में मशहूर गायक श्रीभगवान ने अपनी शानदार रागनियों और भजनों की प्रस्तुति दी। मेले का मुख्य आकर्षण कुश्ती अखाड़ा रहा, जहां प्रदेश के जाने-माने पहलवानों ने अपनी बाजुओं की जोर-आजमाइश की। अखाड़े में पहुंचे मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर और भाजपा उपाध्यक्ष सतीश नांदल ने पहली कुश्ती के पहलवानों का हाथ मिलवाकर दंगल की शुरुआत कराई। मुख्य अतिथियों ने विजेता और उप-विजेता पहलवानों को नकद राशि व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

केसीएल में रोहतक रॉयल्स ने हिसार हीरोज को हराया

रोहतक। एड्रॉइट स्पोर्ट्स एलएलपी के स्वामित्व वाली रोहतक रॉयल्स ने कबड्डी चैंपियंस लीग (केसीएल) में अपने शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए सीजन के अपने तीसरे मुकाबले में हिसार हीरोज को 40–28 से करारी शिकस्त दी। मैट पर एकजुटता, जज़्बा और तीव्रता का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रॉयल्स ने रेडर्स और डिफेंडर्स के सामूहिक प्रयास से एक संपूर्ण टीम प्रदर्शन किया। रोहतक रॉयल्स अपना अगला मुकाबला 1 फरवरी को गुरुग्राम गुरूज़ के खिलाफ खेलेगी। टीम के कप्तान संदीप नरवाल ने शानदार डिफेंस के साथ आगे बढ़कर नेतृत्व किया और नौ अंकों के साथ मुकाबले के शीर्ष स्कोरर रहे।

संकट मोचन मंदिर में गणेश वंदना और हनुमान कथा का वाचन किया

रोहतक। माता दरवाजा स्थित संकट मोचन मंदिर में ब्रह्मलीन गुरुमां साध्वी गायत्री के आशीर्वाद से आयोजित 5 दिवसीय 25वें वार्षिकोत्सव के चौथे दिन भक्ति और श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। शनिवार को मंदिर की गद्दीनशीन साध्वी मानेश्वरी देवी ने गणेश वंदना व हनुमान कथा का वाचन किया। उन्होंने हनुमान के अनन्य भक्ति प्रसंगों को सुनाकर भक्तों को भाव-विभोर कर दिया। मुख्य अतिथियों के रूप में फरीदाबाद की मेयर प्रवीण जोशी, भाजपा हरियाणा के प्रदेश संगठन महामंत्री फ़नींद्र नाथ शर्मा और प्रदेश कोषाध्यक्ष अजय बंसल ने शिरकत की। अतिथियों ने ज्योति प्रज्वलित कर पूजा-अर्चना की। मंदिर के सचिव गुलशन भाटिया ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी साझा की। कथा व्यास साध्वी मानेश्वरी देवी ने हनुमान द्वारा सीना चीरने के मर्मस्पर्शी प्रसंग का वर्णन किया।

खबर संक्षेप

ऑल इंडिया इंटर-यूनिवर्सिटी भारोत्तोलन में दृष्टि कौशिक ने जीता स्वर्ण पदक

रोहतक। महारानी किशोरी जाट कन्या महाविद्यालय की छात्रा दृष्टि कौशिक ने महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी (एमडीयू) का प्रतिनिधित्व करते हुए ऑल इंडिया इंटर-यूनिवर्सिटी भारोत्तोलन चैंपियनशिप 2025-26 में शानदार प्रदर्शन कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 25 से 30 जनवरी तक पंजाब यूनिवर्सिटी में आयोजित की गई। दृष्टि कौशिक ने 63 किलोग्राम भार वर्ग में बेहतरीन ताकत और तकनीक का प्रदर्शन करते हुए स्नेच में 89 किलोग्राम तथा क्लीन एंड जर्क में 115 किलोग्राम भार उठाया। इस प्रकार कुल 204 किलोग्राम वजन उठाकर उन्होंने स्वर्ण पदक जीतने के साथ-साथ वीमेन बेस्ट लिफ्टर का खिताब भी अपने नाम किया। रोहतक पहुंचने पर महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. राजबीर सिंह, रजिस्ट्रार कृष्णकांत गुप्ता एवं निदेशक खेल डॉ. शकुंतला बेनीवाल ने दृष्टि को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर टीम कोच एवं टीम मैनेजर नरेश हुड्डा, ब्रिजेश कौशिक तथा ओमबीर भी उपस्थित रहे।

दादी भदा मंदिर भंडारे में पहुंचे सांसद दीपेंद्र हुड्डा बोले, इतिहास पर गर्व ही हमारी असली पहचान

रोहतक। 721 वर्ष पुराने ऐतिहासिक गांव रुड़की में सती दादी भदा की स्मृति में आयोजित माही चौदस का धार्मिक व सामाजिक आयोजन शुक्रवार को श्रद्धा, परंपरा और भाईचारे के वातावरण में संपन्न हुआ। गांव की दक्षिण दिशा में स्थित दादी भदा मंदिर पर विशाल भंडारे एवं मेले का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सांसद दीपेंद्र हुड्डा विशेष रूप से पहुंचे और श्रद्धालुओं को संबोधित किया। सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि छह वर्ष अमेरिका में रहने के दौरान उन्होंने देखा कि हर सभ्यता अपने इतिहास पर गर्व करती है। गांव रुड़की का 721 वर्ष पुराना गौरवशाली इतिहास ही इसकी असली पहचान है, जो पीढ़ियां बदलने के बावजूद कभी नहीं बदलती। उन्होंने कहा कि व्यक्ति चाहे दुनिया के किसी भी कोने में चला जाए, उसकी जड़ें और संस्कार उसे उसकी पहचान से जोड़े रखते हैं। ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को संस्कृति से जोड़ने और सामाजिक सौहार्द को मजबूत करने का कार्य करते हैं।

समर्थगुरुधारा में आत्म क्रांति का दौर शुरू : औलिया

रोहतक। समर्थगुरु सिद्धार्थ औलिया हिसार से मुरथल आश्रम लौटते हुए सनसिटी, सेक्टर 36 रोहतक में वरिष्ठ आचार्य अनहद के हाल ही में नवनिर्मित समर्थगुरु निवास पर रुके। वह हिसार में आयोजित सिद्धार्थ ध्यान योग के 500 नए साधकों को औंकार दीक्षा देकर लौट रहे थे। उन्होंने कहा कि अब समर्थगुरुधारा आत्म क्रान्ति की ओर अग्रसर हैं जिसमें अध्यात्म के प्रति साधकों की रुचि बढ़ रही है और पहले ही तल ध्यान योग में ओंकार दीक्षा पाकर साधक आत्मावान होकर जी रहे हैं। ड्राइंग रूम सत्संग के महत्व को बताते हुए उन्होंने कहा कि हर घर में शाम को आरती होनी चाहिए। अध्यात्म के साथ साथ सनातन संस्कृति को भी जीवित रखना है। इस अवसर पर जिला समन्वयक डॉक्टर परमवीर फोगाट, ओंकार, अनिल सरोहा, स्वामी राजू, स्वामी रतन, दलशेर मलिक, रमेश बहादुरगढ़, पंकज, सुरेश डांगी, विशाल, सुमन, आशा मोनिका, संगीता व समर्थगुरु सचिव मीराबाई इत्यादि मौजूद रहे।

वरिष्ठ नागरिकों व दिव्यांगों ने सहायक उपकरण के लिए करवाया पंजीकरण

महम। नगर पालिका कार्यालय महम में वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों को सहायक उपकरण उपलब्ध करवाने के लिए पंजीकरण शिविर लगाया गया। शिविर का आयोजन भारत सरकार की एलिम्को टीम द्वारा लगाया गया। शिविर के आयोजक नगर पालिका के वाइस चेयरमैन बसंत लाल गिरधर ने बताया कि वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों की जांच की गई। उसके बाद उनका पंजीकरण किया गया है। जिस भी व्यक्ति को जिस भी प्रकार के सहायक उपकरण की जरूरत है, उसको वह उपकरण निशुल्क उपलब्ध करवाया जाएगा। पंजीकृत लोगों को भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) द्वारा भारत सरकार की राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत वाकर, व्हील चेयर, कान की मशीन, छड़ी, सरवाइकल कॉलर, बैटरी द्वारा चालित ट्राइ साइकिल, पहिया कुर्सी, वैसाखी आदि उपकरण दिए जाएंगे। इस अवसर पर नगर पालिका सचिव नवीन नांदल, पालिका अभियंता अशोक हुड्डा, नपा वाइस चेयरमैन बसंत लाल गिरधर, एमिनेंट पर्सन जसमेर सिंह, एमसी ऋषि भारद्वाज, राजेश गिरावड़, जयनारायण, लीलू बेडवा और एलिम्को संस्था से राजेश व हिमांशु मौजूद थे।

गणित प्रश्नोत्तरी में नन्हें पिटाइंस ने दिखाई प्रतिभा

रोहतक। पठानिया पब्लिक स्कूल में शनिवार को कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए गणित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य बच्चों में गणित के प्रति रुचि बढ़ाना तथा उनकी तार्किक सोच और गणनात्मक क्षमता को विकसित करना रहा। प्रश्नोत्तरी के दौरान बच्चों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ रोचक प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता को और अधिक रोचक बनाने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न टीमों क्रेजी कैलकुलेटर, इनफिनिटी थिंकर्स, मैथ्स मैजिशियन्स, हैप्पी नंबर्स, लॉजिक लीग, नंबर निन्जास, सिग्नस, यूनिकॉर्न, पेगासस, फीनिक्स, एक्विला और डेल्फाइनस में विभाजित किया गया। प्रश्नोत्तरी पांच चरणों में आयोजित की गई, जिससे बच्चों ने गणित को खेल-खेल में समझा और उसका आनंद लिया।

जीडी गोयनका इंटरनेशनल स्कूल के छात्र तेजस का राष्ट्रीय खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन

रोहतक। कुंडल, खरखौदा निवासी जीडी गोयनका इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा 11 के छात्र तेजस ने खेल जगत में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। तेजस ने दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में आयोजित 69वें राष्ट्रीय खेलों में पारंपरिक मार्शल आर्ट थांग-टा प्रतियोगिता में भाग लेकर शानदार प्रदर्शन किया। तेजस की इस उपलब्धि के चलते अब उनका चयन आगामी खेलो इंडिया गेम्स के लिए हुआ है, जहां वे अपने खेल थांग-टा में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह सफलता न केवल उनके परिवार, बल्कि पूरे विद्यालय एवं क्षेत्र के लिए गर्व का विषय बनी है। तेजस की सफलता पर विद्यालय के निदेशक विक्रांत मायना एवं सान्या मायना ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि तेजस ने अपनी मेहनत, अनुशासन और समर्पण से यह साबित कर दिया है कि विद्यालय के विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सक्षम हैं। सह-निदेशक हिमांशु गुप्ता एवं एचओडी (गेम्स) पंकज कुमार ने भी तेजस को बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

सुरक्षित नहीं रेलवे स्टेशन

हर ओर से हो रहा प्रवेश सीसीटीवी भी एक्टिव नहीं

30 एक्सप्रेस व पैसेंजर ट्रेनों का रोज हो रहा आवागमन

70 कैमरों से अब होगी निगरानी मार्च तक लगेंगे

29 करोड़ से तैयार हो रहा नया भवन, अब तक **50** फीसदी काम हो चुका है पूरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर का रेलवे स्टेशन इन दिनों गंभीर सुरक्षा खामियों के चलते असुरक्षा के घेरे में है। हालात ऐसे हैं कि स्टेशन परिसर में किसी भी दिशा से बिना रोक-टोक प्रवेश किया जा सकता है। यह समस्या नई नहीं है, बल्कि नए भवन निर्माण से पहले भी यही स्थिति बनी हुई थी। यात्रियों की लगातार आवाजाही और ट्रेनों की संख्या को देखते हुए सुरक्षा के ये हालात चिंता बढ़ाने वाले हैं।

फिलहाल रेलवे स्टेशन पर एक भी सीसीटीवी कैमरा सक्रिय नहीं है। हालांकि राहत की बात यह है कि मार्च माह तक स्टेशन को 70 सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में लाने की योजना है। इसके लिए प्रक्रिया जारी है और सभी कैमरों का कंट्रोल रूम रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) थाने में स्थापित किया जाएगा। कैमरे लगने के बाद स्टेशन के हर कोने पर नजर रखी जा सकेगी, जिससे असामाजिक तत्वों और संदिग्ध गतिविधियों पर अंकुश लगने की उम्मीद है। इस स्टेशन पर प्रतिदिन करीब 30 एक्सप्रेस और पैसेंजर ट्रेनें आती-जाती हैं। इसके अलावा मालगाड़ियों की आवाजाही भी होती रहती है। जहां मालगाड़ियां खड़ी की जाती हैं, वहां से भी स्टेशन में प्रवेश का अलग रास्ता बना हुआ है। यही रास्ता सुरक्षा के लिहाज से सबसे संवेदनशील माना जा रहा है। बताया जाता है कि अधिकांश बेटिकट यात्री इसी रास्ते का इस्तेमाल कर स्टेशन से बाहर निकल जाते हैं, जिससे न सिर्फ राजस्व को नुकसान होता है बल्कि सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल खड़े होते हैं।

रोहतक। रेलवे स्टेशन के अन्य बने रास्तों से प्लेटफार्म पर जाते यात्री।

आरपीएफ थाने में कंट्रोल रूम बनेगा

फिलहाल रेलवे स्टेशन पर निर्माण कार्य जारी है। धीरे-धीरे कार्य को भी पूरा किया जा रहा है। मार्च तक कैमरे भी लगेंगे। ताकि संपूर्ण तरीके से यात्रियों को सुविधा मिल सके। सीसीटीवी कैमरों की निगरानी के लिए आरपीएफ थाने में ही एक अत्याधुनिक कंट्रोल रूम स्थापित किया जाएगा। यहां से सभी कैमरों की लाइव मानिटरिंग की जाएगी।
- **बलराम मीणा,** स्टेशन अधीक्षक,

ठोस प्रबंध नहीं

यात्रियों का कहना है कि स्टेशन पर प्रवेश और निकास के लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। प्लेटफॉर्म तक पहुंचने के लिए टिकट जांच की सख्ती न के बराबर है। शाम और रात के समय स्थिति और भी गंभीर हो जाती है, जब स्टेशन पर भीड़ कम होती है और असामाजिक तत्वों की आवाजाही बढ़ जाती है।

आधुनिक सुविधाएं होंगी

रेलवे स्टेशन का नया भवन बन रहा है जिस पर 29 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। निर्माण कार्य का 50 प्रतिशत से अधिक काम पूरा हो चुका है। नए भवन के साथ आधुनिक सुविधाएं और बेहतर सुरक्षा व्यवस्था देने का दावा किया जा रहा है। सीसीटीवी लगने के बाद स्टेशन की तस्वीर बदलेगी।

हरिभूमि मेरा शहर मेरी समस्या सेक्टर-14 पहल

चारों तरफ फैला कबाड़, जगह हो गई संकरी

नगर नगम ने सामुदायिक केंद्र को बना दिया कूड़े का गोदाम, हर कोई परेशान

रोहतक। सेक्टर-14 स्थित सामुदायिक केंद्र की बदहाली लोगों के लिए परेशानी का कारण बनती जा रही है। नगर निगम द्वारा अतिक्रमण हटाने के दौरान जब्त किया गया सामान लंबे समय से सामुदायिक केंद्र में डंप कर दिया गया है। इसके चलते यह केंद्र सामाजिक व पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए उपयोगी स्थल के बजाय नगर निगम के कबाड़ का अड्डा बन गया है। हालात यह हैं कि यहां नियमित सफाई तक नहीं हो पा रही, जिससे लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि सामुदायिक केंद्र का निर्माण ही इस उद्देश्य से किया गया था कि यहां शादी-विवाह, धार्मिक आयोजन, सामाजिक बैठकें व अन्य कार्यक्रम आसानी से किए जा सकें, लेकिन केंद्र में चारों तरफ फैला कबाड़, जब्त किया गया सामान, टूटी कुर्सियां, लोहे के ढांचे, बैनर-पोस्टर और अन्य सामग्री रखे होने के कारण जगह संकरी हो गई है। इससे न केवल कार्यक्रमों की व्यवस्था प्रभावित हो रही है, बल्कि स्वच्छता पर सवाल खड़े हो गए हैं।

स्थानीय लोगों ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि इस समस्या का जल्द समाधान नहीं हुआ तो हम आंदोलन करने पर मजबूर होंगे। निगम यहां से सामान हटवाए और नियमित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करे।

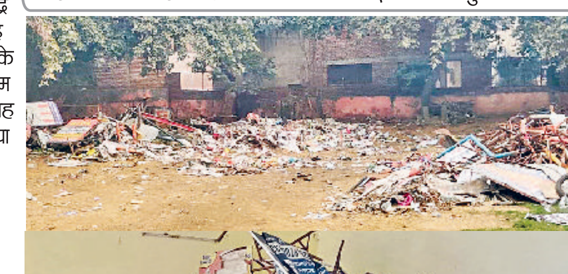

कई बार कर चुके शिकायत नहीं हुई ठोस कार्रवाई

सामुदायिक केंद्र पूरे इलाके के लिए बेहद जरूरी है। लोग पारिवारिक कार्यक्रमों के साथ-साथ सामाजिक बैठकों का आयोजन करते हैं, लेकिन नगर निगम ने अतिक्रमण हटाने के दौरान जब्त सामान को यहां डाल दिया। कई बार निगम अधिकारियों से शिकायत की जा चुकी है, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।
-**सुनेहरा काजल**, प्रधान, आरडब्ल्यूए

धूल मिट्टी और गंदगी बढ़ा रही परेशानी

सामुदायिक केंद्र में कबाड़ पड़े रहने से सफाई भी सही तरीके से नहीं हो पा रही। धूल-मिट्टी, गंदगी और बदबू के कारण यहां कार्यक्रम करना मुश्किल हो गया है। कई परिवारों को मजबूरी में निजी मैरिज पैलेस या अन्य महंगे स्थानों का सहारा लेना पड़ रहा है। आर्थिक बोझ बढ़ रहा है।
-**विरेंद्र आर्य**, महासचिव, आरडब्ल्यूए

सामुदायिक केंद्र सार्वजनिक संपत्ति पर इसका दुरुपयोग किया जा रहा

सामुदायिक केंद्र सार्वजनिक संपत्ति है, लेकिन इसका दुरुपयोग किया जा रहा है। निगम को चाहिए कि जब्त सामान के लिए अलग गोदाम या स्थान तय करे, न कि सामुदायिक केंद्र जैसे उपयोगी स्थल को कबाड़घर बना दे।
-**राजेंद्र दांगी**, उपप्रधान, आरडब्ल्यूए

आग लगने या बड़ी दुर्घटना की आशंका भी बनी रहती है, जगह भी बेहद संकरी

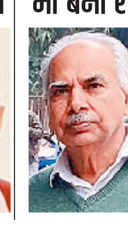

सामुदायिक केंद्र में पड़े सामान में आग लगने या दुर्घटना की आशंका है। संकरी जगह व अव्यवस्थित ढंग से रखा कबाड़ किसी बड़े हादसे को न्योता दे सकता है। नगर निगम तुरंत यहां से सामान हटवाए व नियमित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करे।
-**एमएल अरोड़ा**, सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर

मेरा शहर, मेरी समस्या कॉलम के जरिये आप भी रखें अपनी बात। अगर सेक्टर, गली-मोहल्ला, वार्ड, गांव और आसपास हैं समस्याओं से परेशान तो इस नंबर 9253681012 पर करें व्हाट्सएप। हम उठाएंगे आपका मुद्दा।

खबर संक्षेप

मायना में बाबा हरिदास चौथी रेस स्पर्धा आज

रोहतक। मायना गांव में 1 फरवरी को बाबा हरिदास चौथी रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इस खेल प्रतियोगिता का आयोजन दिनेश फौजी, नवीन पंघाल और मनोज पंघाल द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री के ओएसडी गजेंद्र फोगाट रहेंगे। इस रेस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों, युवाओं और महिलाओं में खेल भावना को बढ़ावा देना तथा स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता फैलाना है।

ओवरलोडिंग वाहनों के कागजात जांचे

रोहतक। सड़क सुरक्षा माह के तहत उपायुक्त सचिन गुप्ता द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की अनुपालना में तथा क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण सचिव वीरेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में आज आरटीए टीम द्वारा यातायात पुलिस के सहयोग से ओवरलोडिंग वाहनों की जांच हेतु सांझा ऑपरेशन चलाया गया। अधिकारियों ने बताया कि ओवरलोडिंग न केवल सड़क सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है, बल्कि इससे सडक़ों की क्षति भी होती है। ऐसे में भविष्य में भी इस प्रकार के सघन जांच अभियान जारी रहेंगे। चेकिंग अभियान के दौरान थाना प्रभारी (यातायात पुलिस) जसबीर सिंह, परिवहन निरीक्षक जसबीर नरवाल, परिवहन उप-निरीक्षक संदीप गुलिया तथा सहायक उप-निरीक्षक राजेश सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र का किया भ्रमण

रोहतक । महर्षि दयानंद विवि. के बॉटनी विभाग एवं ईएसएम सेल के संयुक्त तत्वावधान में विद्यार्थियों ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्रेरणादायी शैक्षिक भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने गुरुकुल की गोशाला, गोबर गैस प्लांट, जीवामृत एवं घनजीवामृत निर्माण की प्रक्रिया, गुरुकुल शिक्षा पद्धति तथा नेचुरोपैथी से संबंधित गतिविधियों का अवलोकन करते हुए व्यवहारिक ज्ञान अर्जित किया। डॉ. विनीता हुड्डा के निर्देशन में संचालित सर्टिफिकेट कोर्स इन नेचुरल फार्मिंग के सफल समापन पर राज्यपाल (महाराष्ट्र एवं गुजरात) तथा गुरुकुल प्रमुख आचार्य देवव्रत ने विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। आचार्य देवव्रत ने कहा कि प्राकृतिक खेती से उत्पादन में वृद्धि होती है, लागत घटती है और इससे किसानों की आय दोगुनी करने की दिशा में सशक्त मार्ग प्रशस्त होता है।

लावारिस मिली बालिका गई प्री-अडॉप्शन में

■ लखीराम आर्य जगन्नाथ दत्तक ग्रहण एजेंसी में भेजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

तीन महीने पूर्व सोनीपत जिले में लावारिस अवस्था में मिली नवजात बालिका को अब प्री-अडॉप्शन प्रक्रिया में भेज दिया गया है। बालिका का प्रवेश बाल कल्याण समिति सोनीपत के माध्यम से तथा बाल कल्याण समिति रोहतक के निर्देशानुसार दत्तक ग्रहण एजेंसी में कराया गया था। शनिवार को बाल संरक्षण अधिकारी के आदेशानुसार संबंधित दस्तावेजों का निरीक्षण कर प्री-अडॉप्शन की प्रक्रिया पूर्ण की ।

उल्लेखनीय है कि करीब तीन महीने पहले सुबह लगभग 5 बजे सोनीपत क्षेत्र में एक गढ़ी के पास किसी अज्ञात महिला या पुरुष द्वारा नवजात शिशु को छोड़ दिया गया था। सुबह सैर के लिए निकले एक सज्जन की नजर बच्ची पर पड़ी, जिन्होंने तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस की कार्रवाई के बाद बालिका को संरक्षण हेतु लखीराम आर्य जगन्नाथ दत्तक ग्रहण एजेंसी में भेजा गया।

प्री-अडॉप्शन के अवसर पर आश्रम के मंत्री युवराज सिंह , सुभाष सांगवान, रविन्द्र सिंह, राजरूप राठी एवं हवासिंह रागे उपस्थित रहे। एजेंसी के मैनेजर संदीप सिंह ने बताया कि वर्तमान में आश्रम में सात बच्चे रह रहे हैं और सभी स्वस्थ हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि बालिका को शीघ्र ही स्नेहिल परिवार मिलेगा।

बाबा मस्तनाथ मठ का माई चौदस का मेला हुआ संपन्न

समाधि स्थलों पर माथा टेककर श्रद्धालुओं ने लिया आशीर्वाद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

आठवीं शताब्दी से अध्यात्म, शिक्षा, चिकित्सा, सूर्य-उपासना और भारतीय संस्कृति के अनुपम संगम के रूप में प्रतिष्ठित बाबा मस्तनाथ मठ, अस्थल बोहर में सदियों पुरानी परंपरा के अनुरूप प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला माई चौदस का मेला गहरी आस्था और श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ। मेले में न केवल रोहतक और आसपास के क्षेत्रों, बल्कि दूर-दराज से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया और परम सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी महाराज तथा सिद्ध योगिनी पाई देवी की समाधि स्थलों पर माथा टेक कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

माई चौदस के नाम से प्रसिद्ध यह मेला हर वर्ष अस्थल बोहर मठ परिसर में आयोजित किया जाता है। मान्यता है कि यह स्थल केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध तपोस्थली भी है, जहां सच्चे मन से की गई प्रार्थना अवश्य फलित होती है। इसी विश्वास के चलते मेले के दोनों दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली। बाबा मस्तनाथ जी की समाधि पर ब्रह्म मुहूर्त से ही दर्शन के लिए लंबी कतारें लगनी शुरू हो गई थीं। ब्रह्म मुहूर्त में मठ परिसर में धूणे प्रज्वलित किए गए और समाधि स्थलों पर विधिवत पूजा-अर्चना का क्रम आरंभ हुआ। श्रद्धालुओं ने देसी घी की जोत प्रज्वलित की, गुड़, कंबल और अन्य श्रद्धा-सामग्री अर्पित की। दिनभर भजन-कीर्तन और जयकारों से पूरा मठ परिसर भक्तिमय वातावरण में डूबा रहा।

खबर संक्षेप

सेवानिवृत्त चिकित्सकों को भावभीनी विदाई

रोहतक। पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के लेक्चर थिएटर-1 में शनिवार को टीचर वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से सेवानिवृत्त हुए पूर्व कम्युनिटी मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. बीएम वशिष्ठ तथा ऐच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाली हड्डी रोग विभाग की प्रोफेसर डॉ. कृष्णा के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित किया गया। कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल ने दोनों चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनके सेवाकाल की सराहना की। डॉ. बीएम वशिष्ठ ने अपने सेवाकाल को संतोषजनक बताते हुए सहयोगियों और परिवार के समर्थन के लिए आभार जताया। वहीं डॉ. कृष्णा ने सहयोगियों और मरीजों से मिले स्नेह को अविस्मरणीय बताया।

एमडीयू से आठ कर्मचारी सेवानिवृत्त

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से आठ कर्मचारी सेवानिवृत्त हो गए। कुलपति कार्यालय में आयोजित विदाई समारोह में कुलपति प्रो. राजबीर सिंह, भारतीय पुनर्वास परिषद की पूर्व अध्यक्ष डॉ. शरणजीत कौर, कुलसचिव डॉ. कृष्णकांत समेत अन्य अधिकारियों ने सेवानिवृत कर्मियों को भावभीनी विदाई दी। कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों- उप कुलसचिव सीमा खट्टर, अधीक्षक सीपी धवन, सहायक सतीश कुमार, वरिष्ठ पुस्तकालय सहायक सुरेश कुमार, लिपिक रोहताश सिंह, सुरक्षा प्रहरी सुरेंद्र सिंह व धन सिंह तथा सफाई कर्मचारी लाली देवी के कार्यकाल की सराहना की। इस अवसर पर भारतीय पुनर्वास परिषद की पूर्व अध्यक्ष डॉ. शरणजीत कौर आदि मौजूद रहे।

पुलिस के 6 अधिकारी-कर्मचारी सेवानिवृत्त

रोहतक। पुलिस में कार्यरत 6 पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी गुरुवार को पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त हो गए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय स्थित सभागार में विदाई समारोह हुआ। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) प्रतीक अग्रवाल ने सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उज्ज्वल भविष्य और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। एएसपी प्रतीक अग्रवाल ने सेवानिवृत्त हुए हॉनरेरी निरीक्षक जगबीर सिंह, हॉनरेरी निरीक्षक कर्मबीर, हॉनरेरी निरीक्षक रणबीर सिंह, उप निरीक्षक राजकुमार, उप निरीक्षक सुरेन्द्र सिंह तथा मुख्य सिपाही सुखवीर सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

वैश्य महाविद्यालय में ऑनलाई सम्मेलन का हुआ आयोजन

शोध और शिक्षण की प्रक्रियाओं को बदल रहा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

वैश्य महाविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा शनिवार को उच्च शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान, नवाचार और अकादमिक परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस बहुविषयक सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों से 200 से अधिक शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने हिस्सा लिया।

सम्मेलन के मुख्य संरक्षक और वैश्य एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष विकास गोयल ने अपने संदेश में एआई की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आज शोध और शिक्षण की प्रक्रियाओं को बदल रहा है। यह तकनीक न केवल प्रशासनिक कार्यों में दक्षता लाती है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को भी सशक्त बनाती है।प्रो. (डॉ.) संजय गुप्ता, डॉ. मोनिका गुप्ता एवं डॉ. रवि कांत ने बताया कि सम्मेलन का बहुविषयक स्वरूप प्रतिभागियों के लिए अत्यंत लाभकारी रहा। संयोजक डॉ. विकास चाहर एवं डॉ. मुकेश कुमार ने कहा कि लगभग 200 प्रतिभागियों की भागीदारी ने सम्मेलन को एक सशक्त राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। संस्थान के कार्यकारी संरक्षक अनिल कुमार बिंदल, राधे श्याम गर्ग, अनिल बंसल, पवन कुमार मित्तल, मोहित गोयल और रुपेश जैन ने संयुक्त रूप से इस आयोजन की सराहना करते हुए इसे तकनीकी नवाचार की दिशा में एक आवश्यक कदम बताया।

समाज में फैलने वाले अंधकार को दूर करते हैं संतः सांसद

महम। फरमाणा गांव में अंबेडकर भवन का उद्घाटन करते सांसद रामचंद्र जांगड़ा। फोटो : हरिभूमि

महम। राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगडा ने शनिवार को फरमाणा गांव में सांसद निधि से 15 लाख की लागत से निर्मित अम्बेडकर भवन का उद्घाटन किया। सांसद संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के जयंती समारोह में बतौर मुख्य अतिथि गांव फरमाणा पंहुचे थे। ग्रामीणों ने उनका फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया। जांगड़ा ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा की संत किसी एक समाज के न होकर सभी समाजों की धरोहर होते हैं। वे सदैव एक प्रेरणा बन कर समाज में फैलने वाले अंधकार को दूर करते हैं। उन्होंने कहा कि आज भाजपा की सरकार में लोकप्रिय मुख्यमंत्री नायब सैनी के नेतृत्व में सभी संतों और महापुरुषों की जयंती राज्य स्तर पर मनाई जा रही हैं। ताकि सर्व समाज उनसे प्रेरणा ले सके। सांसद ने कहा की कांग्रेस पार्टी जी राम जी योजना पर घटिया राजनीति कर रही है। आज नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। सांसद ने कहा की महम हल्के में करोड़ों रुपये की विकास परियोजनाए चल रही हैं।

कॉन्फ्रेंस में 200 पेपर प्रस्तुत किए गए , 600 डेलीगेट्स पहुंचे

आईएसएसीओएन कॉन्फ्रेंस में जानी-मानी फैकल्टी ने लिया हिस्सा

एनेस्थीसियोलॉजी में एआई निभा सकता अहम भूमिकाः कुलपति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय आईएसएसीओएन कॉन्फ्रेंस का शनिवार को कुलपति डॉ एचके अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित करके वंदे मातरम गीत के साथ औपचारिक रूप से शुभारंभ किया। कुलपति डॉ एचके अग्रवाल ने कहा कि खुशी है कि इतने अच्छे टॉपिक पर इंस्टीट्यूट में यह कॉन्फ्रेंस हो रही है। एनेस्थीसिया विभाग बहुत महत्वपूर्ण विभाग होता है अस्पताल में और पेरिऑपरेटिव मैनेजमेंट में मदद करता है।

एनेस्थीसियोलॉजी में एआई में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

रोहतक। कार्यक्रम का दीप जलाकर शुभारंभ करते कुलपति डॉ एचके अग्रवाल।

डॉ अग्रवाल ने कहा कि कॉन्फ्रेंस के लिए डॉ एस के सिंघल और डॉ सुशीला तक्षक की टीम बधाई की पात्र है। डॉ. एसके सिंघल ने कहा कि पूरे विभाग ने काफी सहयोग किया है। पहले दिन 10 वर्कशॉप का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश की जानी-मानी फैकल्टी ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि यह प्लेटफॉर्म अपने रिसर्च को दिखाने के लिए बहुत ही अच्छा है। डॉ सिंघल ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में 200 पेपर प्रस्तुत किए गए, जिसे स्टूडेंट्स के साथ फैकल्टी ने भी प्रस्तुत किया। 600 डेलीगेट्स का रजिस्ट्रेशन किसी भी जोनल कॉन्फ्रेंस में होना रिकॉर्ड है।

इन्हें किया सम्मानित

डॉ. कीर्ति ने बताया कि कार्यक्रम में डॉ आर सी अग्रवाल, डॉ बी राधाकृष्णन, डॉ दीपक माविया, डॉ ब्रिगेडियर टी प्रभाकर, डॉ एसएससी चक्र राव, डॉ ए एस कामो राव, डॉ मुरलीधर जोशी, डॉ गणेश प्रभु, बलवीर छाबड़ा, डॉ मीनाक्षी सुंदरम, डॉ राजीव गुप्ता, डॉ मधुरी, डॉ राकेश गर्ग, डॉ इंद्राणी, डॉ रमा कृष्ण रेड्डी, डॉ बलजीत सिंह, डॉ रविन्द्र कुमार, डॉ चंद्र शेखरन, डॉ हीना सुनील, डॉ दीवान, डॉ सुजाता घोष, डॉ तनवीर, डॉ पारुल, डॉ मंजूशाह को विशेष तौर पर सम्मानित किया गया।

आरएसडीबीएम ट्रस्ट ने भाली आनंदपुर में बनाई बेकरी प्रोडक्शन यूनिट

गांव खुद कमाएगा, खुद संवरेगा भाली आनंदपुर से उठी नई सोच

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जब देश में आत्मनिर्भर भारत की चर्चा हो रही है, तब सवाल उठता है कि क्या गांव भी आत्मनिर्भर बन पाएंगे? क्या गांव अपने विकास के लिए किसी उद्योगपति, व्यापारी या समाजसेवी का इंतजार किए बिना खुद आगे बढ़ सकते हैं? जिले के गांव भाली आनंदपुर से इसी सवाल का एक ठोस जवाब सामने आने वाला है।

श्री राम सरण दास भ्याना मेमोरियल ट्रस्ट (आरएसडीबीएम ट्रस्ट) गांव को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक ऐसी पहल करने जा रहा है, जो न सिर्फ रोजगार पैदा करेगी, बल्कि गांव के विकास का मॉडल भी बदलेगी। ट्रस्ट गांव में एक बेकरी प्रोडक्शन यूनिट लगाई है। जिसका पूरा मुनाफा गांव के विकास में ही खर्च होगा। बता दें कि अक्सर गांवों में यह धारणा बन चुकी है कि सड़क, चौपाल, गली, या अन्य विकास कार्य तभी होंगे जब कोई बाहरी व्यक्ति मदद करेगा। यही सोच गांवों को आत्मनिर्भर बनने से रोकती है। ट्रस्ट का उद्देश्य इस मानसिकता को तोड़ना है ताकि गांव खुद अपनी आमदनी पैदा करे और उसी से अपना विकास करे। इस पहल की शुरुआत एक बेकरी प्रोडक्शन यूनिट से की गई है, जो भाली आनंदपुर में लगाई है। इस यूनिट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि बेकरी के उत्पाद ग्राहक की आंखों के सामने तैयार किए जाएंगे।

दूसरे गांवों को भी नई राह दिखाएगी : भ्याना

श्री राम सरण दास भ्याना मेमोरियल ट्रस्ट की यह पहल सिर्फ एक यूनिट लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गांव आधारित विकास मॉडल खड़ा करने की कोशिश है। अगर यह प्रयोग सफल होता है, तो भाली आनंदपुर सिर्फ गांव नहीं रहेगा, बल्कि आत्मनिर्भर गांव की एक मिसाल बन जाएगा और यही मिसाल देश के दूसरे गांवों को भी नई राह दिखाएगी।
-**सुमित भयाना**, चेयरमैन, आरएसडीबीएम ट्रस्ट, रोहतक

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन

देश-दुनिया की आबादी भले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।

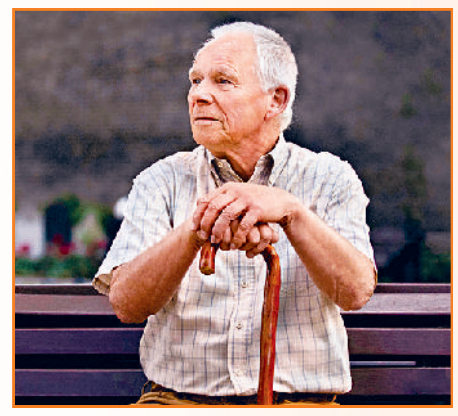

कवर स्टोरी

एस. भाग्यम शर्मा

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है। अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब 76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के साथ हम अपना सुख-दुख शेयर कर लिया करते थे। लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। अब संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जहां परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। कई कपल तो बच्चे तक पैदा नहीं करना चाहते। बच्चे इसलिए नहीं पैदा करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर बच्चे हुए तो उनकी देखभाल करने वाला परिवार में कोई नहीं है। महानगरों में 'ड्यूल इनकम-नो किड्स' का चलन बढ़ रहा है।

बढ़ती सामाजिक दूरी भी है वजह

पिछली सदी तक हम सब अनजान लोगों से भी बातचीत कर लिया करते थे। कोई रास्ता पूछता था तो बड़े मन से उसे रास्ता बताते, कई बार तो उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ कर आ जाते थे। बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बतियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25 % बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर ढेरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आएगा ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजान लोगों से भी बात करने में न हिचकिचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कई देशों में हो रही नई पहल

अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हैप्पी कैब्स चलाई जा रही हैं। यह एक कैब सर्विस है, जिसमें बुजुर्ग लोग अंजान लोगों के साथ बैठकर घूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लोनलीनेस मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग मंत्री, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

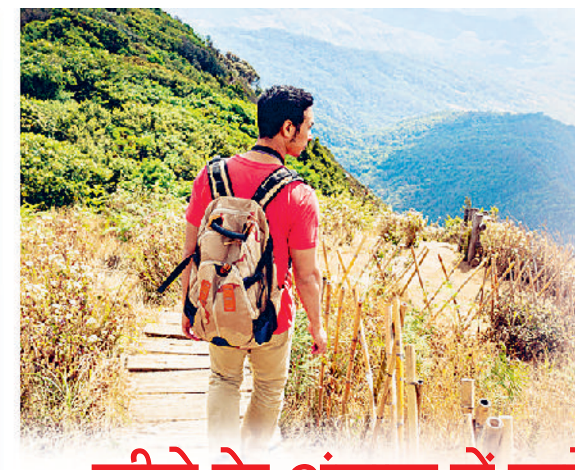

जिंदगी को खुशमिजाज बनाना हमारे ही हाथों में होता है। अगर हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ बदलाव कर लें, कुछ आदतों को शामिल कर लें तो हमारी जिंदगी खुशमिजाज बन सकती है। ऐसा किस तरह हो सकता है, जानिए।

जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

लाइफस्टाइल

शिखर चंद जैन

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडल्ट डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वालडिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हों, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संपर्क रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की कार्लटन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलवेंसकी कहते हैं कि आपको एक्सट्रोवर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से घुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है।

पालतू के साथ समय बिताएं

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय निर्धारित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रीशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयर्नमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संग्रह स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे- परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हंसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार इससे स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नए अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करे, जो आपने कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, घुड़दौड़ देखना, अंडरवाटर स्पोर्ट देखना या इसमें शामिल होना, थिएटर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फीले स्थान की यात्रा करना आदि।

व्यंग्य

अंशुमान खरे

गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान

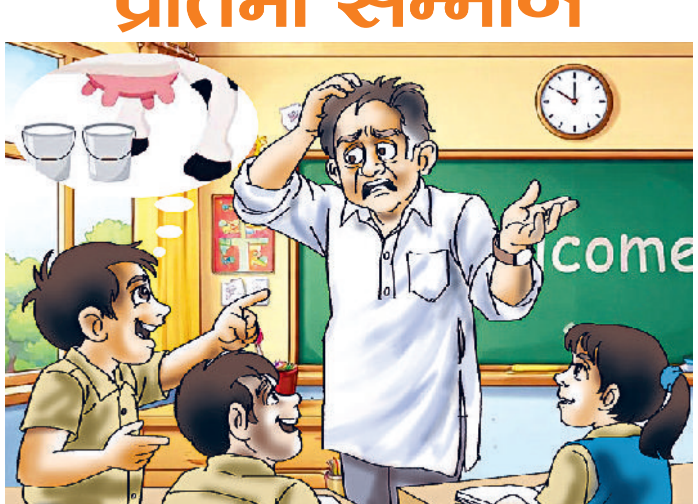

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहां-कहां से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटाते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमन्ना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भुत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देंगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पूछने लगते, 'बताओ बच्चो, अगर एक साड़ी धूप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वेरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपे से बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या?

मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गाय है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।'

पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा।

मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशाभरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था।

मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी मुस्तैदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

लघुकथा / निशा भास्कर

छांव से दूर

अस्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ो की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथराते हुए गुजरता है।'

'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मंयक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद्द न करने लग जाएं, यह ख्याल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होंगे?' कहकर वे तेज-तेज खांसने लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिठाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिठाया और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से बोला, 'मैं अभी आया।' फिर वह शीघ्रता से अस्पताल से बाहर निकल गया। थोड़ी ही देर में पानी की बोतल लेकर आया और बाबूजी को पानी पिलाकर बोला, 'आप चिंता न करें, हम जिस डॉक्टर से दिखाने के लिए आए हैं, उनका बहुत नाम है। उनके इलाज से कितना भी पुराना रोग, ठीक हो जाता है।' बाबूजी, बेटे की बात सुनकर बोले, 'अरे! यह तो बुढ़ापे का रोग है। खांसना-खंखारना तो लक्षण है, बुढ़ापे का। लेकिन बेटा, मेरी एक बात ध्यान से सुन, यह शहर बड़ा है, डॉक्टर बड़ा है पर हम तो बड़े लोग नहीं हैं न! बड़ा शहर और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूं। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेलूंगा और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहत्तर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

अलग मिजाज की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमन्ना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने को विवश भंवरी नजर आती है (औरत), तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमन्ना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमन्ना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटो की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *

पुस्तक: तमन्ना खानम (कहानी संग्रह), **लेखक:** हबीब कैफी, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली

जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की

प्रकृति
शिखर चंद जैन

हर ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजुक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कीट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और भौंरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल भाषा सुगंध होती है। ये हम मनुष्यों से अपनी मादक महक के माध्यम से बतियाते हैं। खुशबू से वे अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सभी फूल अपनी अलग-अलग खुशबू फैलाते हैं। कुछ मधुमक्खियों और तितलियों को बुलाने के लिए और कुछ कीड़े-मकोड़ों को दूर भगाने के लिए। वैसे फूलों के पौधों समेत सभी पौधे, अपनी जड़ों और फंगस के नेटवर्क के जरिए भी एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और पोषक तत्वों या पानी की कमी जैसी जानकारी साझा करते हैं। साथ ही हवा में रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं।

हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये दवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भोजन (फल) उपलब्ध हैं। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा गहरा जुड़ाव रहा है। फूलों के चटक, खूबसूरत रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती हैं।

कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है। *

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्हें बेच कर, कोई सजा कर, कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपए का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। बेंगलुरु, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नाइजीरिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।

सफलता के लिए जानना है जरूरी
आप क्या नहीं करना चाहते

करियर फील्ड कोई भी हो, उसमें सफल होने के लिए आपका फोकस्ड होना सबसे जरूरी है। फोकस्ड होने के लिए यह जानना जितना जरूरी है कि आपको क्या-क्या करना है, उतना ही जरूरी यह भी होता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं?

सेल्फ मोटिवेशन
कीर्तिशेखर

कई बार जीवन में 'हां' से ज्यादा जरूरी और ताकतवर होता है, 'नहीं'। विशेषकर करियर में सफल होने के लिए अगर शुरू से ही हमें यह पता हो कि हम क्या नहीं बनना चाहते, तो बहुत फायदा होता है।

क्या कहती हैं स्टडीज: करियर में सक्सेस के संबंध में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध के मुताबिक 60 फीसदी से ज्यादा लोग ऐसे कामों में लगे होते हैं, जिन्हें वो करना पसंद नहीं करते, मगर जोखिम न उठाने के चलते वो ऐसे काम जीवनभर करते रहते हैं। इसके साथ ही एक दूसरा जबर्दस्त शोध इस विषय पर हुआ है कि दुनिया में जितने सफल लोग हैं, उसमें 90 फीसदी से ज्यादा ऐसे हैं, जो उस काम को कर रहे हैं, जिसे वह करना चाहते थे। जी हां, जब हम कोई ऐसा काम करते हैं, जो हमारा मनपसंद होता है, उसमें सफल होने के चांस 10-20 फीसदी नहीं पूरे 100 फीसदी ज्यादा होते हैं। इसलिए सफलता की असली नींव क्या करना है, से नहीं बल्कि क्या नहीं करना है, से पड़ती है। जिस दिन हम यह समझ लेते हैं कि हम जीवन में क्या नहीं करना चाहते, उसी समय हमारे करने वाले कामों की लिस्ट बिल्कुल साफ और सफलता की उम्मीद बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है।

'नहीं' क्यों जरूरी है: हम अकसर यह मानकर चलते हैं कि हां कहना सकारात्मक होता है और नहीं कहना नकारात्मक। लेकिन बात अगर स्पष्ट रूप से जिंदगी में करियर की दिशा चुनने की हो तो न कहना ज्यादा सकारात्मक होता है बजाय हर काम के लिए हां कर देने के। 'हां' कहना जितना आसान होता है, उसका नुकसान उतना ही बड़ा होता है। इसलिए जो काम न करना चाहते हों, उसे करने के आसान विकल्प मिलें तो बेहतर है 'नहीं' करना सीखें।

सफलता का पहला स्टेप: सफल लोग पहले यह तय करते हैं कि उन्हें क्या नहीं करना। इसलिए वे कुछ बातों को अमल में लाते ही हैं।

- हर काम और हर मौके पर कूद नहीं पड़ते।
- हर चमकदार विकल्प में नहीं फंसते।
- वे हर सलाह को आदेश नहीं मानते।
- सुनते सबकी हैं, लेकिन करते हैं, जो उनके मन में चल रहा होता है। यानी जो उन्हें सही लगता है।
- ऐसे लोग हर अपेक्षा को अपने सिर पर नहीं ढोते हैं।

दरअसल, सफलता का दर्शन दुनिया में कई नामों से जाना जाता है जैसे- फोकस, प्राथमिकता, सीमाएं और आत्मनियंत्रण। लेकिन सबका मूल एक ही है। आखिर मैं क्या करना चाहता हूं और क्या नहीं करना चाहता हूं?

इसलिए नहीं कहने से डरते हैं लोग: नहीं कहने से ज्यादातर लोग इसलिए डरते हैं, क्योंकि न कहना गैरसामाजिक माना जाता है। न कहने में एक किस्म की बगावत, विरोध होता है। इसलिए लोग न कहने से बचते हैं। लेकिन बचना वास्तव में 'बचना' नहीं होता। अगर न कहने से आप बचते हैं तो आखिरकार उसी न में फंस भी जाते हैं। इसलिए जब करियर के बारे में गंभीरता से सोचें तो अपनी सबसे पहली और जरूरी लिस्ट यह बनाएं कि आप क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं? अगर समय रहते आपमें यह स्पष्टता नहीं आई तो एक दिन आपको मजबूर होकर 'नहीं' खुद सिखा देगी। मसलन, मानसिक तनाव के जरिए, असफलता के चलते या पछतावे के रूप में। क्योंकि जो काम आप नहीं करना चाहते और फिर भी करते हैं, तो कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। इसलिए बाद में कोई कीमत चुकाने से बेहतर पहले ही चुका लें, क्योंकि शुरुआत में यह सबसे छोटी होती है।

सफलता दिलाएंगे इन्हें 'नहीं' कहना: जिस दिन आप यह तय कर लेते हैं कि मैं अपनी तुलना 'नहीं' करूंगा, उसी दिन आप अपनी प्रतिभा से असफल होने से बच जाते हैं। तुलना सफलता से दूर करती है। सोशल मीडिया के दौर में तो तुलना एक धीमा जहर बन चुकी है।

खुद को हर जगह साबित 'नहीं' करने का निर्णय भी कारगर है। दरअसल, हर जगह अपनी काबिलियत दिखाने की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि सभी जगहें आपकी सफलता नहीं तय करती हैं। इसलिए अपनी काबिलियत वहीं दिखाइए, जहां वाकई उसकी जरूरत है। लोग क्या कहेंगे, इस डर से अनचाहा फैसला 'नहीं' करना भी जरूरी है। जिस दिन आप फैसले लेने में 'लोग क्या कहेंगे' को माइनस कर लेते हैं तो आपके सारे फैसले सही होने लगते हैं। आजकल एक धारणा बन चुकी है, जो व्यस्त है, वही सफल है। जिस दिन आप इस भेड़चाल को मानने से इनकार कर देंगे, उस दिन से सफलता आपके कदम चूमेगी। रिश्ता भी वही स्वस्थ होता है, जिसमें सम्मान हो और जिसे याद करते हुए भी खुशी हो। जिस रिश्ते को याद करके खुशी न हो, उसे तोड़ना ही बेहतर होता है। *

निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अकसर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें
फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

सजेशन
अंजू जैन

हमारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम होती हैं। घर की फाइनेंसियल कंडीशन अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।

मिथ: अगर आपकी इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।

फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।

मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।

फैक्ट: नहीं, अगर घर का मेंटेनेंस बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट कियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डैड-पुअर डैड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।

मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की जरूरत होती है।

फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।

मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।

फैक्ट: विशेषज्ञ 'अच्छे कर्ज' और 'बुरे कर्ज' में फर्क बताते हैं। अगर कर्ज का उपयोग ऐसी चीज खरीदने के लिए किया जाए, जिसकी वैल्यू बढ़े या जो आय पैदा करे (जैसे बिजनेस लोन), तो वह अच्छा कर्ज है। लेकिन लग्जरी, झूठे दिखावे और फिजूल चीजों के लिए कर्ज लेना गलत है।

मिथ: ज्यादा जोखिम मतलब ज्यादा मुनाफा।

फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इंवेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना और सोच-समझकर निवेश का विविधीकरण करना ही असली समझदारी है।

मिथ: रिटायरमेंट का मतलब 'काम बंद और पूरा आराम करना' है।

फैक्ट: हमेशा याद रखें कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बिना किसी काम के शरीर और दिमाग को जंग लग जाती है। इससे दिमाग परेशानियों और बीमारियों में उलझ जाता है। बेहतर होगा कि रिटायर होने के बाद पसंदीदा काम करें और उससे चार पैसा कमाने की सोचें। टिम फेरिस की पुस्तक 'द 4-आवर वर्कवीक' के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब काम छोड़ना नहीं, बल्कि पसंद का काम करने की आजादी होना है।

मिथ: बजट बनाना खुद पर पाबंदी लगाना है।

फैक्ट: बजट आपको यह नहीं बताता कि आप क्या नहीं कर सकते, बल्कि यह तय करता है कि आपका पैसा कहां जाना चाहिए? यह आपको फिजूलखर्ची से बचाकर आर्थिक आजादी की ओर ले जाता है।

मिथ: अमीर लोग अकसर कंजूस होते हैं।

फैक्ट: अमीर लोग समझदार होते हैं, सोच-समझकर खर्च करते हैं और अपनी इसी आदत के कारण वे अमीर बनते हैं। थॉमस जे. स्टेनली की पुस्तक 'द मिलिनेयर नेक्स्ट डोर' के अनुसार, ज्यादातर करोड़पति साधारण जीवन जीते हैं। वे 'दिखावे' पर नहीं बल्कि 'वित्तीय स्वतंत्रता' पर खर्च करते हैं।

मिथ: पैसा ही सारी बुराइयों की जड़ है।

फैक्ट: यह एक बहुत पुराना भ्रम है। असल में पैसा नहीं 'पैसे का लालच' समस्याओं की जड़ है। पैसा अपने आप में केवल एक जरिया यानी टूल है, जो आपके पास मौजूद संसाधनों को बढ़ाने की क्षमता रखता है।

मिथ: निवेश के लिए मार्केट को 'टाइम' करना (सही समय का इंतजार) जरूरी है।

फैक्ट: 'टाइम इन द मार्केट' (बाजार में समय बिताना) 'टाइमिंग द मार्केट' (बाजार का सही समय चुनना) से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। नियमित रूप से निवेश करना (जैसे एस आई पी के जरिए) और धैर्य रखना ही धन सृजन का सबसे विश्वसनीय तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वेल्थ क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है। *

(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

बॉलीवुड ट्रेंड
डी. जे. नंदन

'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ..'

'वो कौन थी' का गीत 'लग जा गले..'

अब क्यों नहीं बन पाते
रूहानी सुकून देते गीत

पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्ग्स के इस बदले हुए ट्रेंड पर एक नजर।

कई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद्र सप्तक यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...'(स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचाता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सरगोशी में भी अमर हो गया। इसी तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिंगारी कोई भड़के...'(स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...'(फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सभ्य ठहराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी..' (फिल्म 'खामोशी', स्वर-किशोर कुमार, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।

'अमर प्रेम' का गीत 'चिंगारी कोई भड़के'

क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देने' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के समय में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।

वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।

शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।

कभी-कभार सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो..' (गायक-अरिजीत सिंह और अलका याग्निक, संगीत- ए. आर. रहमान) गीत आज के दौर में मधुर गीत की सबसे सशक्त वापसी है। अलका याग्निक की आवाज पुराने दौर की गंभीरता लौटाती है, जबकि अरिजीत का संयम गीत को समकालीन बनाता है। इसी तरह फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' के गीत 'चन्ना मेरेया..' (गायक-अरिजीत सिंह, संगीत- प्रीतम) का मुखड़ा भले ही ऊंचाई छूता हो, लेकिन गीत का अंतरा और भावात्मक आधार नीचे सुर में ही बैठे हैं। यह गीत इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कम ही सही लेकिन आज भी नीचे सुर के भावप्रवण गीत लोगों को खूब भाते तो हैं ही, फिल्म मेकर्स को व्यावसायिक सफलता भी दिलवा सकते हैं।

'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया'

बाजार का है दबाव: आज का संगीत उद्योग जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्क्रॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेंड तय होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंडस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंस भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है। *